



## SHRI V. K. MUNUSAMY

Shri V. K. Munusamy is a well-known terracotta sculptor. He comes from a lineage of 22nd generations of terracotta sculptors. Shri Munusamy's innovation of making miniature figurines, using this ancient art form, is being celebrated internationally, including in world-renowned museums and at multilateral conferences. He has been credited for single-handedly preserving this indigenous Indian art form.

2. Born on 21th July, 1967, Shri Munusamy comes from Villianur, a village in Pondicherry. His ancestors, who passed on this craft through generations, all the way to him, were very successful in making terracotta horses because of the special nature of clay in Villianur. Over 1500 years, the statues his forefathers made — Aiyyanar terracotta horses that stand tall in villages all over Puducherry and Tamil Nadu, have been worshiped as deities. He is the torch bearer of this art, taking this special clay to the international stage through pioneering, creative works of statues and figurines, and showcasing an ancestral art form that continues to amaze the modern world.

3. After learning this art from his father at an early age of 7, Shri Munusamy has brought in two important innovations to preserve this art for posterity and create new livelihoods for the younger generation. First, although he has to his credit the largest Terracotta horse of the world standing tall in Tamil Nadu, he also changed the focus of this indigenous art form towards miniature figurines, more sought by the modern world. Second, for the first time in the history of this art, he trained and coached this art to people beyond his immediate family. Recognizing the immense revenue generating opportunity from exporting Villianur terracotta, young people throng him to learn the art from him. In addition to working with young people of rural Puducherry and Tamil Nadu, he has been teaching this art to incoming foreign students from countries such the United States, Germany, Turkey and Korea.

4. Shri Munusamy has received numerous international, national and state awards. To name a few, he was conferred the UNESCO Seal of Excellence Award in 2005. The Government of India gave him a national award in 2006. The Puducherry Government too had awarded him a state-level award for art in 1991, and the Kalaimatnani award in 2000. In 2017, the Government of India honoured him with the 2017 Shipla Guru award for innovating new miniature style in an ancient art.





## श्री वी. के. मुनुसामी

श्री वी.के. मुनुसामी टेराकोटा के एक सुप्रसिद्ध मूर्तिकार हैं। वह टेराकोटा मूर्तिकारों की बाइसवीं पीढ़ी के मूर्तिकार हैं। इस प्राचीन कला द्वारा लघु मूर्तियाँ बनाने के श्री मुनुसामी के नए प्रयोग की सराहना विश्व प्रसिद्ध संग्रहालयों और बहुपक्षीय सम्मेलनों सहित अंतरराष्ट्रीय स्तर पर की जा रही है। इस स्वदेशी भारतीय कला के संरक्षण का श्रेय केवल उन्हीं को जाता है।

2. श्री मुनुसामी का जन्म पुदुचेरी के एक गाँव विल्लियानूर में, 21 जुलाई, 1967 को हुआ। उनके पूर्वज, प्रत्येक आने वाली पीढ़ी को यह शिल्पकला सौंपते रहे और श्री मुनुसामी ने भी इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए, विल्लियानूर की खास किस्म की मिट्टी से टेराकोटा घोड़े बनाने में भरपूर सफलता हासिल की। 1500 वर्षों से अधिक समय से, उनके पूर्वजों द्वारा निर्मित अय्यनार टेराकोटा घोड़े पुदुचेरी और तमिलनाडु के सभी गाँवों में स्थापित हैं और इन घोड़ों की पूजा देवताओं के रूप में की जाती है। वह इस कला के अग्रणी व्यक्ति हैं, जो मूर्तियों और मूर्तिकाओं को गढ़ने के अपने अभिनव और सृजनात्मक शिल्प के जरिए इस विशेष मिट्टी को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिला रहे हैं, और उनकी यह पैतृक कला दुनिया को विस्मित कर रही है।

3. सात वर्ष की अल्पायु में अपने पिता से इस कला को सीखने के बाद, श्री मुनुसामी ने इस कला को भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित करने के लिए और युवा पीढ़ी के लिए नई आजीविका सृजित करने के लिए दो महत्वपूर्ण नूतन प्रयोग किए हैं। पहला, उन्हें तमिलनाडु में स्थापित विश्व का सबसे बड़ा टेराकोटा घोड़ा बनाने का श्रेय जाता है, परंतु उन्होंने इस देशी कला को लघु मूर्तिकाएं बनाने के लिए प्रयोग किया है, जिसकी आधुनिक विश्व में ज्यादा मांग है। दूसरा, इस कला के इतिहास में पहली बार, उन्होंने अपने परिजनों के अलावा अन्य लोगों को भी इस कला का प्रशिक्षण दिया है। विल्लियानूर टेराकोटा के निर्यात से होने वाली अत्यधिक आय की संभावना को देखते हुए, बड़ी संख्या में युवा उनसे इस कला को सीखने आते हैं। पुदुचेरी और तमिलनाडु के ग्रामीण इलाकों के युवाओं के साथ काम करने के अलावा, वह इस कला को अमेरिका, जर्मनी, तुर्की और कोरिया जैसे देशों से आने वाले विदेशी छात्रों को भी सिखा रहे हैं।

4. श्री मुनुसामी को कई अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उन्हें 2005 में यूनेस्को सील ऑफ एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने उन्हें 2006 में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया। पुदुचेरी सरकार ने भी उन्हें 1991 में राज्य–स्तरीय कला पुरस्कार और 2000 में कलायमतनानी अवार्ड से सम्मानित किया था। भारत सरकार ने उन्हें 2017 में इस प्राचीन कला की नई लघु शैली खोजने के लिए शिल्प गुरु पुरस्कार–2017 से सम्मानित किया था।